Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 4 | APRIL 2023

प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर देवांकन की अवधारणा का क्रमिक विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ ममता शर्मा [1]

[1] इतिहास विभाग

ABSTRACT:

भारतीय राजनीतिक परिवेश एवं सांस्कृतिक परम्परा का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है, और इसकी साहित्यिक एवं पुरातात्विक सामग्री को दो महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में व्यवहृत किया जाता है। इनमें मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य का निश्चय ही अपना विशिष्ट स्थान है। ये मुद्रायें साहित्य एवं पुरातत्व की अन्य परिवृत्तियों से ज्ञात इतिहास का कभी तो समर्थन कर रही होती हैं और कभी किसी युग, राजवंश अथवा राजा विशेष पर प्रकाश डालने अथवा इतिहास लेखन में अपने आप में ही पूर्ण समर्थ होती हैं। ये मुद्रायें न केवल राजनीतिक वरन् सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक, कला और विविध पक्षों पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित प्रकाश डालती हैं।

आर्थिक जगत् के महत्वपूर्ण उपादान मुद्रा का भी अपना एक सुनिश्चित विकास क्रम है। उल्लेखनीय है कि प्रारम्भिक आदिम अवस्था में इस प्रकार की मुद्रा का नितान्त अभाव था और ऐसी परिस्थिति में वस्तु विनिमय के माध्यम से ही मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था, किन्तु क्रमशः उसकी सभ्यता एवं संस्कृति के विकास और आवश्यकताओं की वृद्धि के साथ वस्तु विनिमय अर्थात् वस्तुओं एवं पशुओं की अदला-बदली के माध्यम से मानव दिनचर्या की पूर्ति और इच्छाओं की तृप्ति सुविधाजनक न रह सकी, अतः विनिमय के माध्यम के रूप में धातुओं को स्वीकार किया गया। वस्तुतः मुद्रा के विकास क्रम में सर्वप्रथम धातु के टुकड़ों के तौल में एकरूपता लायी गयी होगी। कालान्तर में धातु की शुद्धता पर भी ध्यान दिया गया होगा। इस प्रकार धातु के टुकड़ों की क्रय-विक्रय में प्रामाणिकता हेतु किसी सत्ता (वणिकवर्ग अथवा राज्य शासन) के चित्र इन पर अंकित किये जाने लगे तथा इस प्रकार मुद्रा की उत्पत्ति हुई होगी।

KEYWORDS:

मुद्रा, विकास क्रम, संस्कृति, राजनीतिक परिवेश, सांस्कृति, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक।

मूल आलेख

इतिहास - निरूपण की दृष्टि से उपलब्ध साधनों और साक्ष्यों के रूप में जो भी प्राचीन कालीन अवशेष आज उपलब्ध हैं उनमें सिक्कों का विशिष्ट मूल्य और महत्व है। उसी की चर्चा यहाँ अभीष्ट है। इस प्रसंग में कहना न होगा कि सिक्कों का उद्भव दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के निमित्त लेन-देन, क्रय-विक्रय में विनिमय के सरल और सुविधाजनक उपकरण के रूप में हुआ था। उनका आविष्कार जब भी हुआ हो और जिन लोगों ने भी किया हो, वे उनके रूप में अनचाहे, अनजाने ऐसा उपकरण प्रस्तुत कर गये, जिसने अपने समय में अपने उद्देश्य की पूर्ति तो की ही, साथ ही उनमें वे अपने जीवन, संस्कृति और अपने कार्य-कलाप की अमिट छाप भी छोड़ गये। आज वे अपने काल के साक्ष्य बनकर हमारे लिए इतिहास निरूपण में ताने-बाने का काम करते हैं।

भारत में मुद्रा की प्राचीनता-

मुद्रा का विकास क्रम मानव समाज की आर्थिक प्रगति के पड़ावों का इतिहास है। मुद्रा की कहानी प्रागैतिहासिक मानव द्वारा बदले में पाने की इच्छा से दिये गये उपहारों (गिफ्ट) से प्रारम्भ होती है। लेन-देन की परम्परा का प्रादुर्भाव इन्हीं उपहारों से हुआ, जिस पर सम्पूर्ण जनजातीय समाज अवलम्बित था। यह लेन-देन की प्रक्रिया वस्तु विनिमय तक ही सीमित थी। इस प्रक्रिया में लेनदार एवं देनदार दोनों को लाभ होता था और यह लेन-देन पूरे समुदाय के संसाधनों की उपयोगिता को बढ़ाता था। इस व्यवस्था में प्रत्येक मनुष्य को अपने उत्पादन का पूर्ण लाभ लेने का अवसर प्राप्त होता था। तथापि विकास की इस अवस्था में साधारण लेन-देन ही हो पाता था। इसमें आवश्यकता एवं उपलब्धता मुख्य प्रेरक तत्व होते थे। किन्तु आर्थिक-सामाजिक विकास के परिणामस्वरूप लेन-देन की व्यवस्था में कठिनाई का अनुभव होने लगा। इस दिशा में मुख्य समस्याएं वस्तुओं के माप तौल, उनके सापेक्षिक मूल्य निर्धारण एवं विभाजन की थी। वस्तुतः वस्तु विनिमय की यह व्यवस्था अविकसित सामाजिक संगठनों में ही संभव थी। ज्यों-ज्यों समाज जटिल होता गया वस्तु विनिमय की व्यवस्था अव्यावहारिक होने लगी। तथापि यह प्रथा परम्परागत रूप से बहुत बाद तक अस्तित्व में रही। यहाँ तक कि आज भी ग्राम्य समुदायों में वस्तु विनिमय की प्रथा न्यूनाधिक रूप से प्रचलित है।

नव पाषाणकाल के उदय के साथ ही मानव की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। इस काल में मानव आखेटक और अन्न संग्रह से पशुपालक और अन्न उत्पादक हो गया। इस काल में खाद्यान्न उत्पादन एवं उपकरण निर्माण में अधिकांशतः आत्मनिर्भर समुदायों का अस्तित्व दिखाई देता है। इस परिवर्तित अर्थव्यवस्था ने शिल्पगत दक्षता को जन्म दिया। उत्तम उपकरण निर्माण करने वाली कार्यशालाओं ने निर्माताओं एवं उपभोक्ताओं के मध्य लेन-देन को अपेक्षाकृत सरल एवं सुविधाजनक बना दिया। परिणामत उपकरण निर्माताओं एवं उपभोक्ताओं के मध्य आदान-प्रदान का एक नियमित सम्बन्ध प्रारम्भ हुआ।

समुदायों के अन्तःसम्बन्धों से उत्पादों की तुलनात्मक गुणवत्ता तथा अच्छे उपकरणों के प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ। तथापि नवपाषाणकाल तक मानव की लेन-देन सम्बन्धी गतिविधियाँ प्रायः प्रस्तर उपकरणों एवं खाद्य पदार्थों तक ही सीमित रहीं।

कालान्तर में स्वर्ण, रजत एवं ताम्र के ज्ञान के साथ ताम्राश्मयुगीन सभ्यता का सूत्रपात होता है। इस काल को स्थूलतः 2600 ई०पू० से लेकर 1600 ई०पू० के मध्य रखा जा सकता है। इस काल में मनुष्य धातुओं की ओर आकृष्ट हुआ। स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि बहुमूल्य धातुओं, पत्थरों एवं शखों की प्राप्ति की इच्छा ने नवपाषाणिक समुदायों की आत्मनिर्भर एवं तटस्थ अर्थव्यवस्था को तोड दिया। इस काल में लोग पशुओं एवं खाद्यान्नों के बदले सम्भवतः पात्रों को भी प्राप्त करते थे। इस युग में उपकरण निर्माण का प्रमुख माध्यम ताम्र था। अतः क्रमशः ताम्र भी विनिमय का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया।

आर्थिक दृष्टि से समुन्नत हड़प्पा सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की प्रथम नगर- सभ्यता थी। आन्तरिक एवं बाह्य दोनों ही प्रकार की समुन्नत व्यापारिक गतिविधियों के बावजूद इस कांस्यकालीन नगर सभ्यता में मुद्राओं का अनुपलब्ध होना एक विस्मय जनक तथ्य है। हड़प्पा सभ्यता का अनुवर्ती ऋग्वेदीय समाज प्रधानतः पशुचारी समाज था। यद्यपि इस काल में कृषि की प्रतिष्ठा में वृद्धि दिखायी देती है तथापि जन-जीवन मुख्यतः पशुओं एवं उनके उत्पादों पर ही निर्भर था।

पूर्व वैदिक समाज में गाय के अतिरिक्त अश्व, रथ, स्वर्णाभूषण आदि भी धन के रूप में स्वीकृत थे। दान-स्तुतियों में पुरोहितों ने इनका दान करने वाले राजाओं की प्रशंसा की है। स्वर्णाभूषण आकार और भार में कम किन्तु बहुमूल्य होने के कारण विशेष आकर्षण के केन्द्र बनें। पूर्व वैदिक काल में मुद्रा प्रणाली का आविष्कार नहीं हुआ था। ऋग्वेदीय समाज में लेन-देन वस्तु विनिमय के माध्यम से ही होता था।

उत्तरवैदिक काल में लौह प्रविधि के ज्ञान के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में परिवर्तन हुआ। इस काल तक आते-आते पशुचारी अर्थव्यवस्था का स्थान कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था ने ले लिया। इस नवीन अर्थव्यवस्था ने विनिमय के माध्यम के रूप में धातु खण्डों के प्रयोग का विचार अंकुरित किया।

सिक्कों का उद्भवक्रम

सिक्कों के उद्भवक्रम की तृतीय अवस्था में वस्तुओं के क्रय-विक्रय हेतु धातुओं को माध्यम माना गया। ये धातु सोना, चांदी, तांबा, सीसा, टिन आदि थे। इन धातुओं के टुकड़े हो सकते थे, अतः तौल के अनुसार इनके माध्यम से लेन-देन सुविधापूर्ण था। भारत के अलावा मिश्र और मेसोपोटामिया में भी इस प्रकार की धातुओं का प्रचार हुआ। इन धातुओं की तौल के लिये तराजू और बांटों का आविष्कार मिश्र और भारत में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक प्राचीन माना जाता है।

चतुर्थ अवस्था में धातुओं के सिक्के बनाये जाने लगे ऊपर की तृतीय स्थिति में धातु के केवल टुकड़े बनाये जाते थे उन पर कोई चिन्ह नहीं अंकित किये जाते थे। वास्तविक सिक्कों पर निर्धारित चिन्हों का होना आवश्यक था तथा उनकी तौल निश्चित रहती थी। धातु के टुकड़ों पर सम्मानित व्यक्तियों की मुहर

इसलिये लगा दी जाती थी ताकि लोगों को यह विश्वास रहे कि उस सिक्के की धातु शुद्ध है तथा उसका वजन सही है। कनिंघम का कहना है कि "भारत में सिक्कों का निर्माण कम से कम एक हजार ई०पू० से प्रारंभ हो गया था। परन्तु भारत के विभिन्न भागों में किये गये उत्खननों से यह पता चला कि यहां ई०पू० 1000 में सिक्के बनते थे"। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि ई०पू० छठी शती के पहले भारत में सिक्कों का अस्तित्व नहीं था। ई०पू० छठी शती से हमारे देश में सिक्कों का प्रचलन प्रारंभ हुआ होगा। इसकी पुष्टि पाणिनि की अष्टाध्यायी तथा प्राचीन बौद्ध साहित्य से होती है। उत्खनन द्वारा मौर्यकाल के सबसे अधिक सिक्के मिले हैं।

सिक्कों पर देवांकन-

प्राचीन काल में सिक्के बनाने के लिए वर्तमान युग की तरह केवल एक ठप्पे का प्रयोग नहीं किया जाता था। सिक्को पर एक से अधिक ठप्पे द्वारा अलग-अलग चिन्ह अंकित किये जाते थे। चांदी को गलाकर उसकी एक पतली चादर बना ली जाती थी। सिक्कों का वजन सन्तुलित करने के लिए चादर को काटा-छांटा जाता था, जिसके फलस्वरूप इन सिक्कों का आकार ज्यामितिक, लम्बा, गोल अथवा अण्डाकार हो जाता था। इन सिक्कों का वजन लगभग 3.20 ग्राम होता है। इन सिक्कों को बनाने की विधि के कारण इन्हें आहत सिक्के कहा जाता है। इन सिक्कों को प्राचीन साहित्य में पण, धरण, पुराण एवं कार्षापण कहा गया है।

इन प्रारम्भिक काल के सिक्कों पर चित की ओर एक से लेकर चार सूर्य के चिन्ह तथा इसके बाद के काल में पांच चिन्ह पाये जाते हैं तथा पट की ओर सादा अथवा हल्के छोटे-मोटे चिन्ह अंकित रहते हैं। पृष्ठभाग के चिन्ह पुनः टकसाल में जांच हेतु आने पर लगाये जाते होंगे। जिस सिक्के के पृष्ठभाग पर अधिक चिन्ह मिलते हैं उस सिक्के का प्रचलन काल अधिक माना जाता है। सिक्कों पर प्रमुखतः सूर्य, चूहा पर्वत के नीचे समुद्र मय मछली, पर्वत के ऊपर वृक्ष, स्वास्तिक चिन्ह, चक्र, त्रिशूल, धनुष-बाण, तराजू वृक्षवेदिका, वृक्ष (विभिन्न रूप में), बकरी वृक्ष के पास, घोडा वृक्ष वेदिका के पास, वृक्ष के ऊपर चूहा, शिव का अंकन, श्री त्र्यंबकेश्वर शिवलिंग का अंकन, वृक्ष के नीचे समुद्र मय मछली, शिव का विभिन्न रूपों में अंकन, तीन मानव आकृति का अंकन, इन तीनों का विभिन्न रूपों में अंकन, बैल का विभिन्न रूप में अंकन, हाथी का विभिन्न रूपों में अंकन, बैल के साथ हल का अंकन, घोडा, ऊँट, खरगोश, मछली का विभिन्न रूपों में अंकन, मगरमच्छ के मुह में मछली, कन्सलों का विभिन्न रूपों में अकन चूहे का विभिन्न रूपों में अकन, मेंढक, साप, नदी मछुआ, मोर, कबूतर, गोल बिन्दुओं का विभिन्न रूपों में अंकन तथा तारा विभिन्न रूपों में अंकित किया गया है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा इन प्रतीकों को अलग-अलग पहचाना और विश्लेषण किया गया है। अधिकांश सिक्कों के अग्रभाग पर प्राय: चार या पांच चिन्ह मिलते हैं। पशुओं के चिन्ह को देवताओं के वाहन के प्रतीक चिन्हों के रूप में माना गया है। वृत्त में बिन्दु को परमब्रह्म व शिव का प्रतीक माना गया है। सूर्य और षडुचक्र तान्त्रिक प्रतीक माने गये हैं। सिक्कों पर अंकित पांचों चिन्ह अलग-अलग होते हैं। कई विद्वानों का कहना है कि इनमें से एक चिन्ह राज्य का, दूसरा राजा का, तीसरा राजधानी का चौथा प्रमुख मंत्री का तथा पांचवां टकसाल के मंत्री का द्योतक होता है।

इन सिक्कों पर बैल तथा हाथी का अंकन अधिक हुआ है। इस प्रकार हिरण, खरगोश और कुत्ते का अंकन भी प्रायः मिलता है। पक्षियों में मोर का अंकन बहुत अधिक मिलता है। लघु जन्तुओं में मछली, कन्सला मेंढक व सांप प्रायः सिक्कों पर देखे जा सकते हैं। पर्वत, नदी, वेदिका, वृक्ष, पर्वत के ऊपर चन्द्रमा, स्वास्तिक, अग्नि वेदिका. शिवलिंग चक्र, त्रिशूल, धनुष, धनुषवाण, तराजू सुगेरू, सूर्य, चन्द्र, षट्चक्र आदि का अंकन भी मिलता है।

इसके अतिरिक्त सिक्कों पर देवी-देवताओं का अंकन भी प्राप्त होता है जिसमें सात प्रकार के सिक्कों पर दो पुरुष और एक महिला की आकृति चिन्हित है।

प्रथम वर्ग के इस सिक्के पर बांयी तरफ से देवी सीता, भगवान श्री राम व लक्ष्मण को एकीकृत रूप में चिन्हित किया गया है। सिक्के पर राजसिंहासन व पर्वत (पांच छोटे-छोटे टीले पर मोर को दर्शाया गया है। सिक्के पर देवी सीता को श्री राम के बायें हाथ की तरफ खड़े हुए बताया है। भगवान श्री राम व श्री लक्ष्मण के सिर पर बालों को जुड़े के रूप में बांध रखा है, जबकि देवी सीता के बालों को दो चोटियों के रूप में बताया गया है। देवी सीता ने अपने दोनों हाथों को सीधी मुद्रा में नीचे की ओर कर रखा है। बीच वाली आकृति में श्री राम ने अपना बायां हाथ कमर पर तथा दायां हाथ शिखा पर रखा है। श्री लक्ष्मण ने भी दोनों हाथ नीचे की ओर सीधी मुद्रा में कर रखे हैं।

द्वितीय वर्ग के इस सिक्के पर बांयी तरफ से देवी सीता भगवान श्रीराम व श्री लक्ष्मण को पास-पास खड़े हुए दर्शाया गया है, इनके अतिरिक्त सिक्के पर कछुए के आगे छोटी-छोटी मछलियां, कछुए के ऊपर खरगोश केदूशियस का चिन्ह अंकित है। सिक्के पर देवी सीता को श्री राम के बांयी तरफ खड़े हुए बताया गया है। देवी सीता के सिर पर बालों की दो बोटियां भी हुई है. बालों को गूंथकर बहुत ही सुन्दर रूप में बांध रखा है। देवी सीता का मुखमण्डल श्री राम की ओर है।

तृतीय वर्ग के इस सिक्के पर बांयी तरफ से देवी सीता, भगवान् श्री राम व श्री लक्ष्मण को अलग-अलग चिन्हित किया गया है। देवी सीता के सिर पर बालों के तीन जूड़े बंधे हुए है। देवी सीता ने अपने दोनों हाथ फैलाकर सीधी मुद्रा में कर रखे है जबकि बीच वाली आकृति में श्रीराम ने अपना बाया हाथ कोहनी मोडकर कमर पर कर रखा है तथा दायां हाथ आगे की ओर कर रखा है। भगवान् श्री राम य श्री लक्ष्मण के सिर पर एक-एक जूडा बंधा है। तीनों को दायी ओर देखते हुए बताया गया है।

चतुर्थ वर्ग के इस सिक्के पर बायीं तरफ से देवी सीता, भगवान श्री राम व श्री लक्ष्मण को अलग-अलग चिन्हित किया गया है। देवी सीता के सिर पर बालों के तीन जूड़े बंधे हुए हैं। देवी सीता ने अपने दानों हाथ फैला रखे है, तीनों को दायीं ओर देखते हुए बताया गया है। इसके अतिरिक्त सिक्के पर एक सीधे नुकीले वृक्ष का अंकन है। पांचवा चिन्ह अस्पष्ट हलधर है।

पंचम वर्ग के इस सिक्के पर बायीं तरफ से देवी सीता, भगवान् श्री राम व श्री लक्ष्मण को अलग-अलग चिन्हित किया गया है। तीनों को दायी ओर देखते हुए बताया गया है। इसके अतिरिक्त सिक्के पर पर्वत है। रामायण मे दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् श्लोक अंकित है।

षष्ठम् वर्ग के इस सिक्के पर बायीं तरफ से देवी सीता, भगवान श्री राम व श्री लक्ष्मण को अलग-अलग चिन्हित किया गया है। देवी सीता के सिर पर बालों के तीन जूड़े बंधे हुए हैं। देवी सीता ने अपने दोनों हाथ फैला रखे हैं, जबकि बीच वाली आकृति में भगवान् श्री राम ने अपना बायां हाथ मोड़कर कमर पर रखा हुआ है। इसके अतिरिक्त सिक्के पर पर्वत कोहनी है। पांचवां चिन्ह अस्पष्ट है।

सप्तम वर्ग के इस सिक्के पर बांयी तरफ से देवी सीता, भगवान् श्री राम व श्री लक्ष्मण का अंकन है। देवी सीता का मुखमण्डल सामने की ओर देखते हुए बताया है। सिर पर बालों के तीन जूड़े बंधे हुए हैं। दोनों हाथ फैलाकर नीचे की ओर कर रखे हैं। भगवान् श्री राम व श्री लक्ष्मण को दायीं ओर देखते हुए खड़ी मुद्रा में दर्शाया गया है।

इस प्रकार इन सिक्कों पर "श्री मैन में बीच की आकृति भगवान श्री राम की है, इनके बायें हाथ की तरफ दो चोटियों अथवा तीन जूड़ो वाली आकृति देवी सीता की है। जो प्रत्येक सिक्के पर श्री राम के वामांग पर ही दर्शायी गयी है।

गुप्तकाल की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर देवी (लक्ष्मी), कार्तिकेय देवता आदि का अंकन मिलता है। इण्डो-सैसेनियन सिक्कों के पृष्ठभाग पर अग्निवेदिका का अंकन किया गया है। प्रतिहार शासकों ने आदि-वराह के सिक्कों का प्रचलन कराया। गांगेयदेव प्रकार के सिक्कों पर चतुर्भुजी पद्मासन लक्ष्मी का अंकन किया गया है। अश्वारोही एवं वृषभ प्रकार के सिक्कों पर नन्दी को दर्शाया गया है।

इसी प्रकार मुस्लिम काल के सिक्कों पर कलना एवं खलीफाओं के नाम लिखवाकर धार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया है।

निष्कर्ष

सिक्कों पर देवी-देवताओं का अंकन विश्व स्तर पर अति प्राचीन काल से ही देखा जा सकता है। प्राचीन काल के ग्रीक सिक्कों पर अपोलो, ज्यूस, एथेना आदि देवी-देवताओं का अंकन कर धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति की गयी है। हिन्दू धार्मिक मान्यता के अनुसार परम्परागत रूप से एवं प्राचीन काल से दो पुरुषों के साथ बायें (वामांग) हाथ की ओर खड़ी महिला के अंकन को श्री लक्ष्मण, भगवान् श्री राम एवं देवी सीता के रूप में देखा व पहचाना जाता रहा है। इस दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास के उक्त अंश का संकलन एवं पुनः आकलन होना आवश्यक है इसी कारण प्रीचन भारतीय संस्कृति के गौरवशाली वैभव एवं परम्पराओं से विश्व स्तर पर अनभिज्ञता रही है। शक्तिशाली शासक अधिक संख्या में सिक्के बलवाते थे। सिक्कों के दफीने मिलने के स्थानों एवं संख्या के आधार पर शक्तिशाली शासकों के साम्राज्य के क्षेत्रफल एवं सीमा का ज्ञान होता है। इस आधार पर प्राचीनकाल के इतिहास लेखन में मुद्राशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

REFERENCES

1. प्राचीन भारतीय मुद्राएं - परमेश्वरी लाल गुप्ता
2. भारत के पूर्व कालिक सिक्के - डॉ परमेश्वरी लाल गुप्ता
3. कैटलॉग ऑफ द इंडियन कोइंस इन द ब्रिटिश म्यूजियम - जॉन एलेन
4. युग-युगों में राजस्थान सिक्कों के माध्यम से - श्री बृजमोहन सिंह परमार
5. ए कॉइंस ऑफ एशियन इंडिया फ्रॉम द अर्लीयस्ट टाइम्स डाउन टू द सेवंथ सेंचुरी -कनिंघम, ए.डी. वाराणसी, 1963.
6. ऋग्वैदिक इण्डिया – ए.सी.दास
7. लेक्चरर्स ऑन एन्शियेन्ट इंडियन न्यूमिस्मेटिक - डी.आर. भंडारकर
8. एन्शियेन्ट इंडियन वेट- ई थॉमस
9. व्हाट हैपेंड इन हिस्ट्री - चाइल्ड गार्डन

10. दि प्रीहिस्टोरिक बैकग्राउंड ऑफ इंडियन कल्चर - डी एच गार्डन